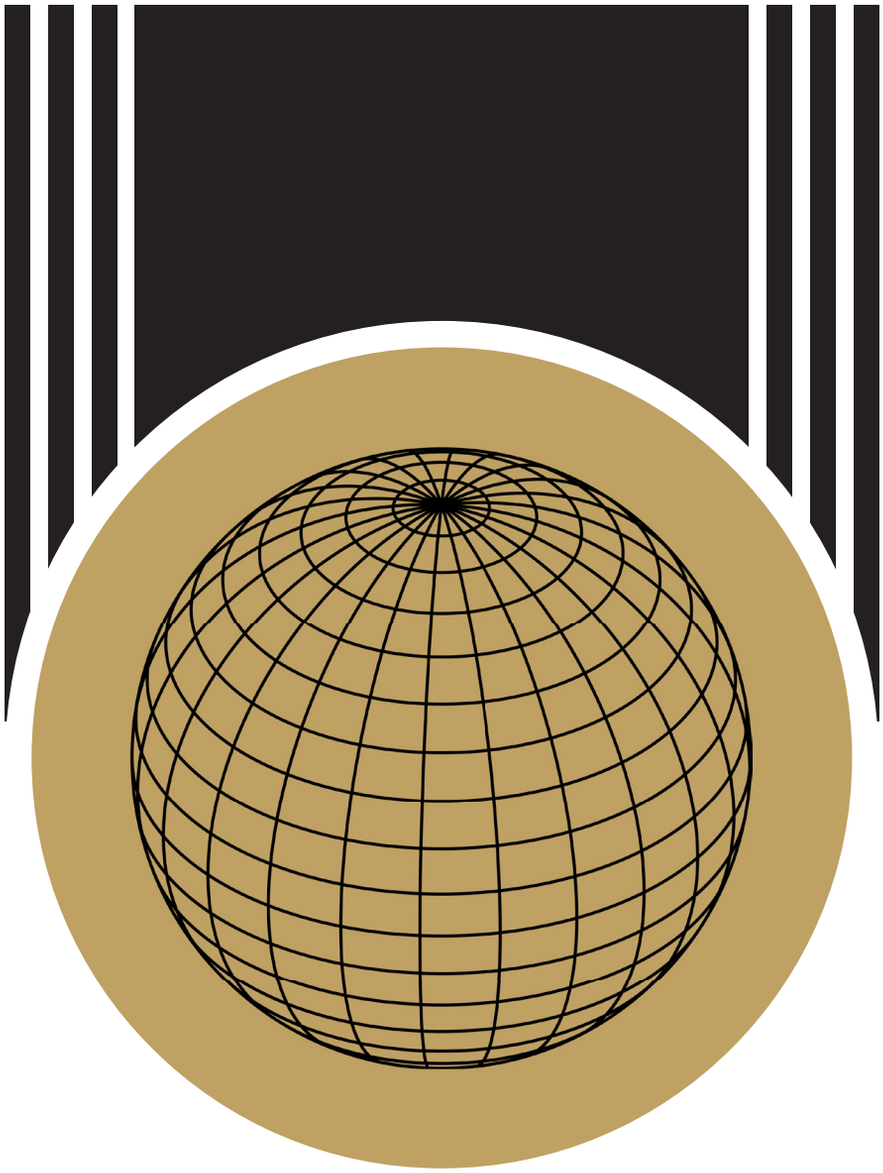

UPSC PATHSHALA

मानव भूगोल

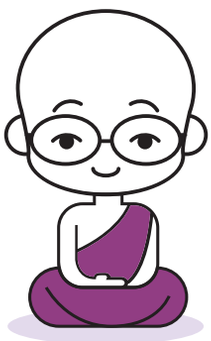

प्रस्तावना

सामान्य रूप से सिविल सेवा परीक्षा के तीनों चरणों और विशेष रूप से परीक्षा के मुख्य चरण में मानव भूगोल एक आवश्यक और मुख्य विषय है। यह विशेष विषय आपको प्रकृति के साथ-साथ समाज की विशेषताओं और समाज बनाने वाले मनुष्यों को समझने के लिए आवश्यक ज्ञान देता है, जो इसे एक महत्वाकांक्षी सिविल सेवा आकांक्षी के लिए महत्वपूर्ण है।

आंकड़ों और तथ्यों की भारी मात्रा के कारण मानव भूगोल को समझना सुस्त और नीरस हो जाता है। चीजों को सरल बनाने के लिए, हमने मानव भूगोल के दायरे और वेटेज का विश्लेषण किया है और यूपीएससी के उम्मीदवारों को अधिकतम परिणाम प्राप्त करने में मदद करता है | पुस्तक को समझने में आसान और याद रखने में आसान तरीके के उद्देश्य से डिजाइन किया है।

इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय को विस्तृत रूप से लिखा गया है लेकिन साथ ही संक्षिप्त रूप से सरल भाषा का उपयोग करते हुए एक उम्मीदवार के लिए विषय के सार को समझना आसान बनाने का भी ध्यान रखा गया है । यह पुस्तक अपने पाठकों को वैचारिक स्पष्टता प्रदान करेगी और परीक्षा में विभिन्न प्रकार और प्रश्नों की प्रकृति के उत्तर देने में उन सभी की मदद करेगी।

2 भारत की जनसंख्या

भारत की जनसांख्यिकीय रूपरेखा

परिभाषा जनसांख्यिकी

- जनसांख्यिकी मानव जनसंख्या की सामाजिक-आर्थिक जानकारी के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें आय, विवाह दर, जन्म दर और मृत्यु दर, रोज़गार, शिक्षा आदि का अध्ययन शामिल है

- किसी भी देश की जनसांख्यिकी, उस देश के जनसंख्या के आयाम, उसकी संरचना तथा स्थानों के वितरण पर निर्भर करती है तथा उस प्रक्रिया से जिससे जनसंख्या मे परिवर्तन आता है।

जनसांख्यिकी रूपरेखा का महत्व

- जनसांख्यिकी जनसंख्या के अध्ययन में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह लोगों और जनसंख्या की व्यापक विशेषताओं का संग्रह और विश्लेषण है।
- जनसांख्यिकीय विवरण का उपयोग व्यवसायों के लिए किया जा सकता है। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि बाजार में क्या रुझान हैं ताकि हम भविष्य की उपभोक्ता मांग के लिए रणनीति बना सकें।
- इंटरनेट में हालिया विकास, बड़ा विवरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग जनसांख्यिकी विवरण की उपयोगिता और अनुप्रयोग को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

जनसांख्यिकी चक्र

प्रत्येक राष्ट्र जनसांख्यिकीय के 5 चक्र चरणों से गुजरता है। । वे हैं: -

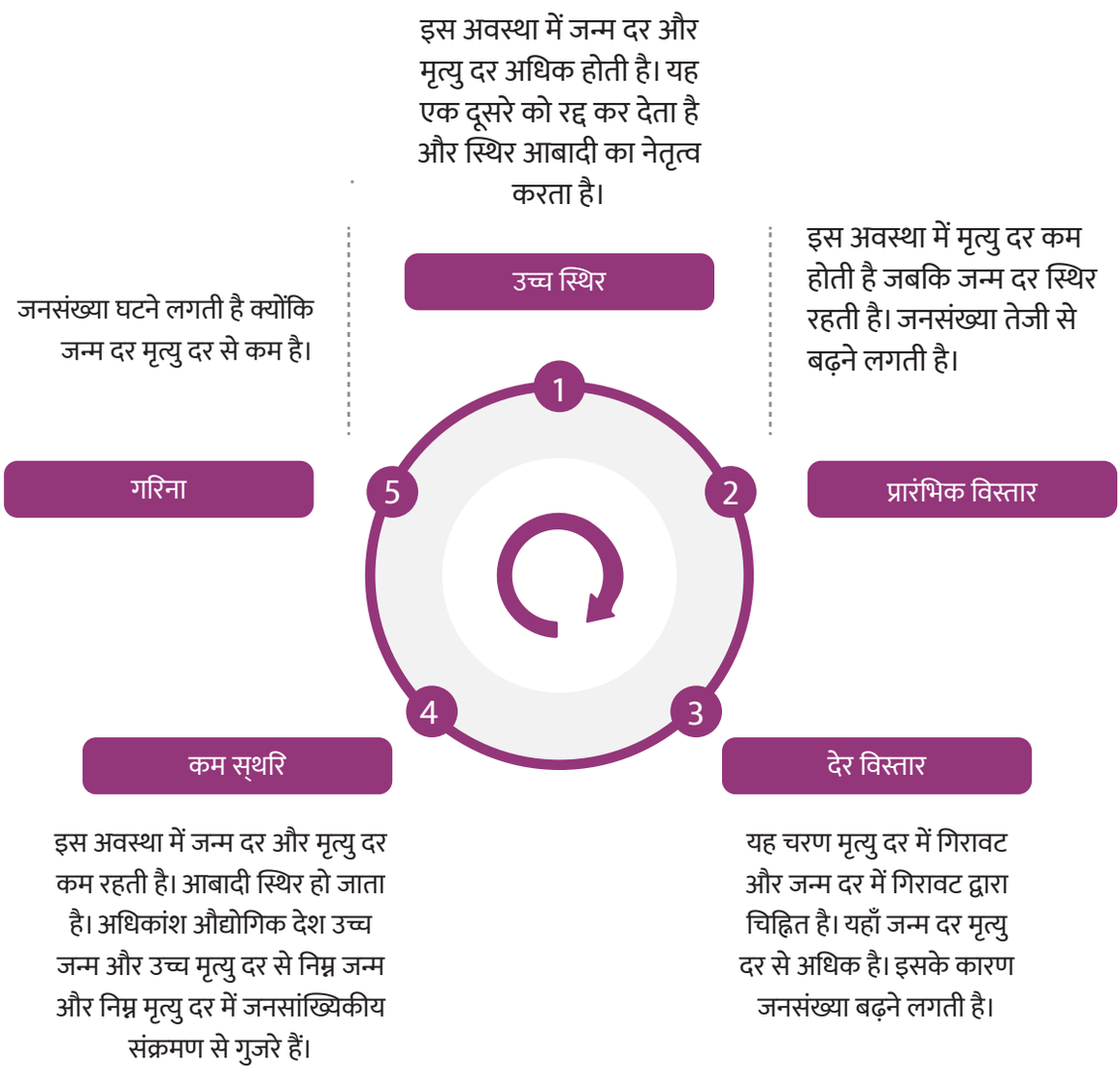

भारत की जनसांख्यिकीय रूपरेखा

- भारत 1.43 बिलियन जनसंख्या के साथ दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है।
- संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार, भारत को 2027 के आसपास दुनिया के सबसे अधिक जनसंख्या वाले देश के रूप में जाना जाएगा।
- विश्व जनसंख्या संभावना 2019 का अनुमान है कि भारत 2019 और 2050 के बीच लगभग 273 मिलियन लोगों को जोड़ सकता है।
- स्वतंत्रता के बाद भारत की जनसंख्या 3.35 गुना बढ़ी है और पांच गुना होगी 2011 मे 110 वर्षों के बाद 1210 मिलियन तक पहुंचेगी।
- 2011 जनगणना में, भारत की जनसंख्या 1210.2 मिलियन थी। भारत की यह जनसंख्या जापान, इंडोनेशिया, ब्राजील, पाकिस्तान, बांग्लादेश और संयुक्त राज्य अमेरिका संयोजन से बनी 1214.3 मिलियन जनसंख्या के बराबर है।

भारत की जनसंख्या

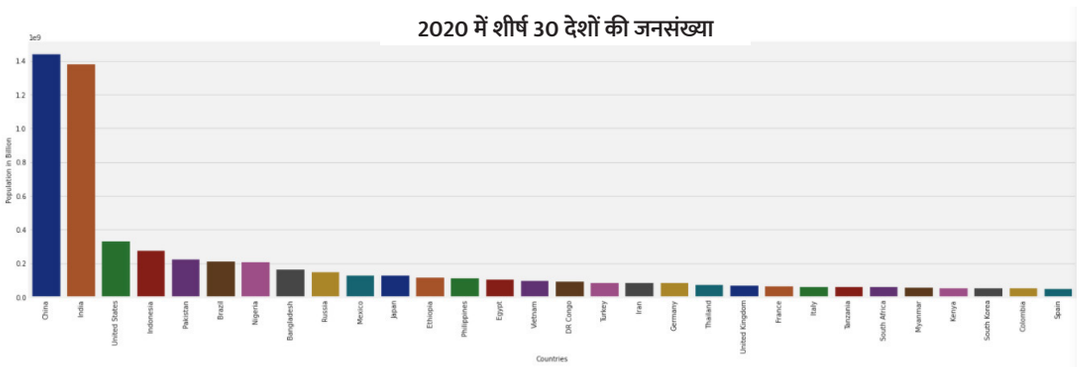

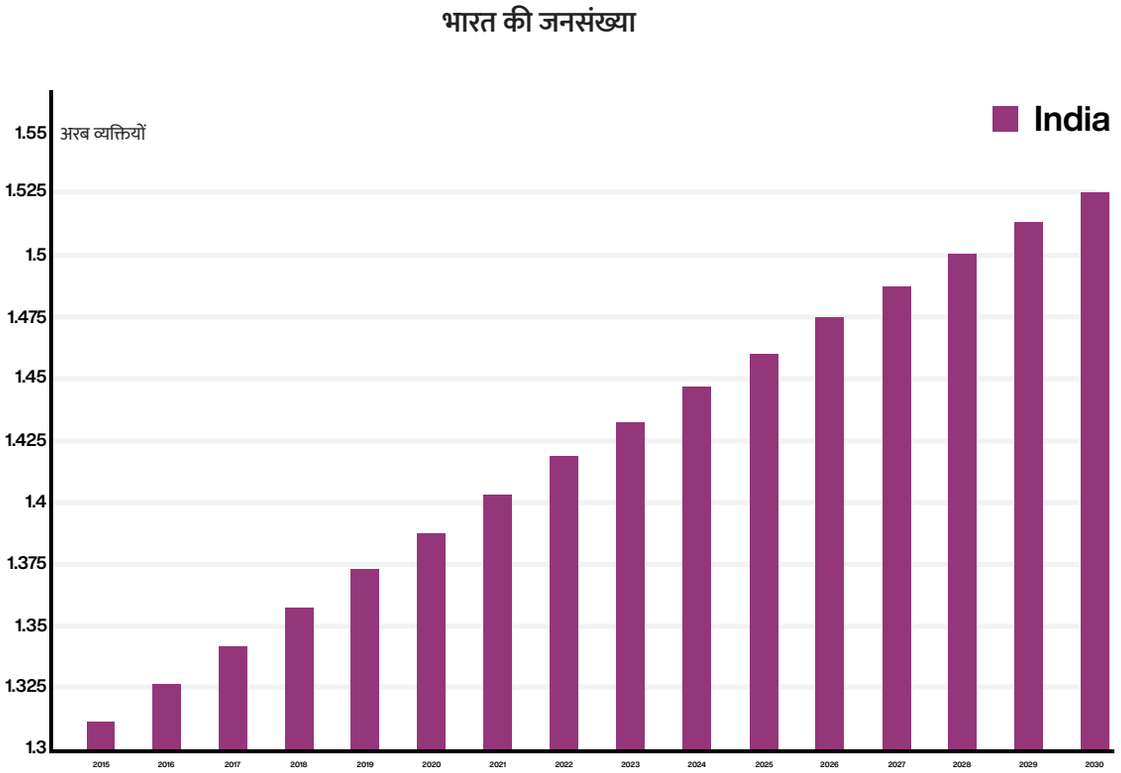

भारत की जनसंख्या

- तेजी से बढ़ती जनसंख्या के साथ, भारत जनसंख्या के मामले में चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा देश है।
- भारत दुनिया के कुल भौगोलिक क्षेत्र के 2.4 प्रतिशत पर दुनिया की कुल जनसंख्या का 17.7% हिस्सा है।

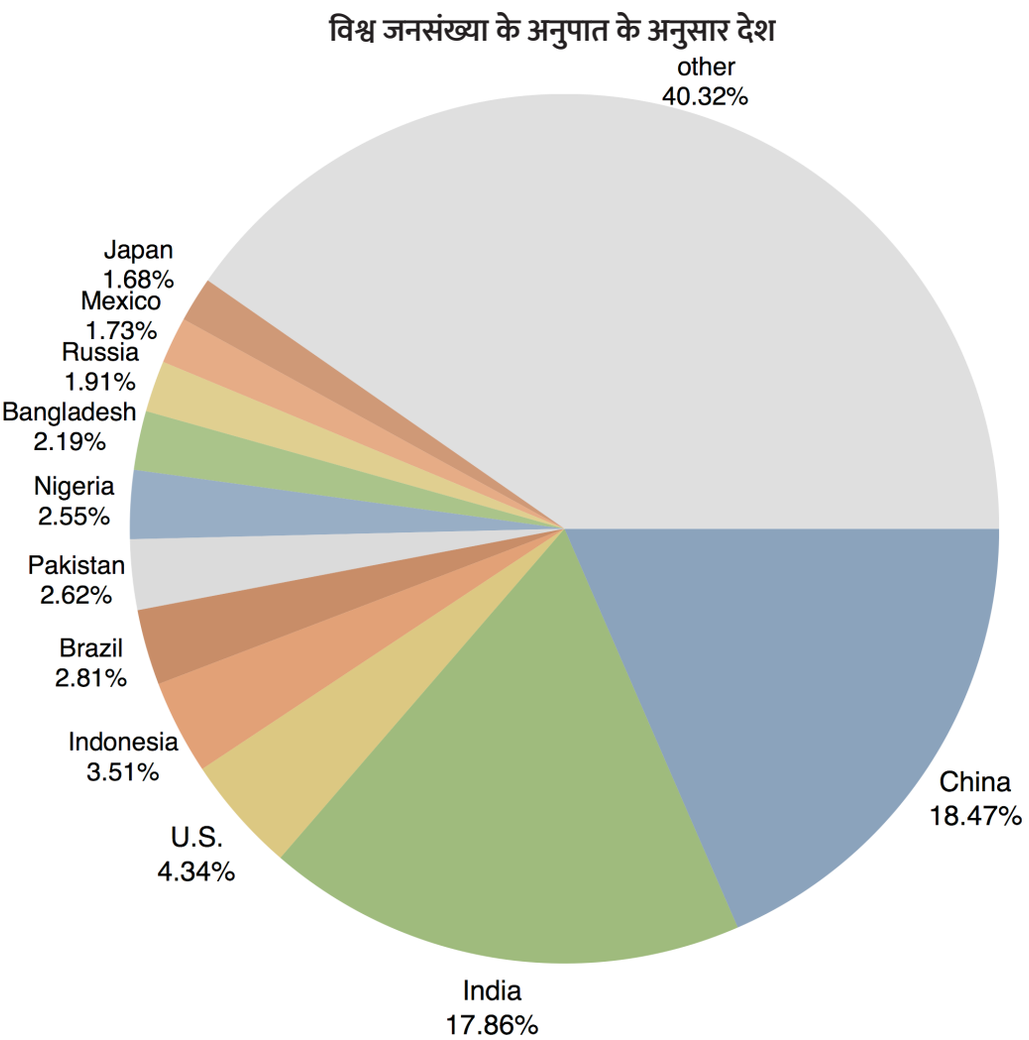

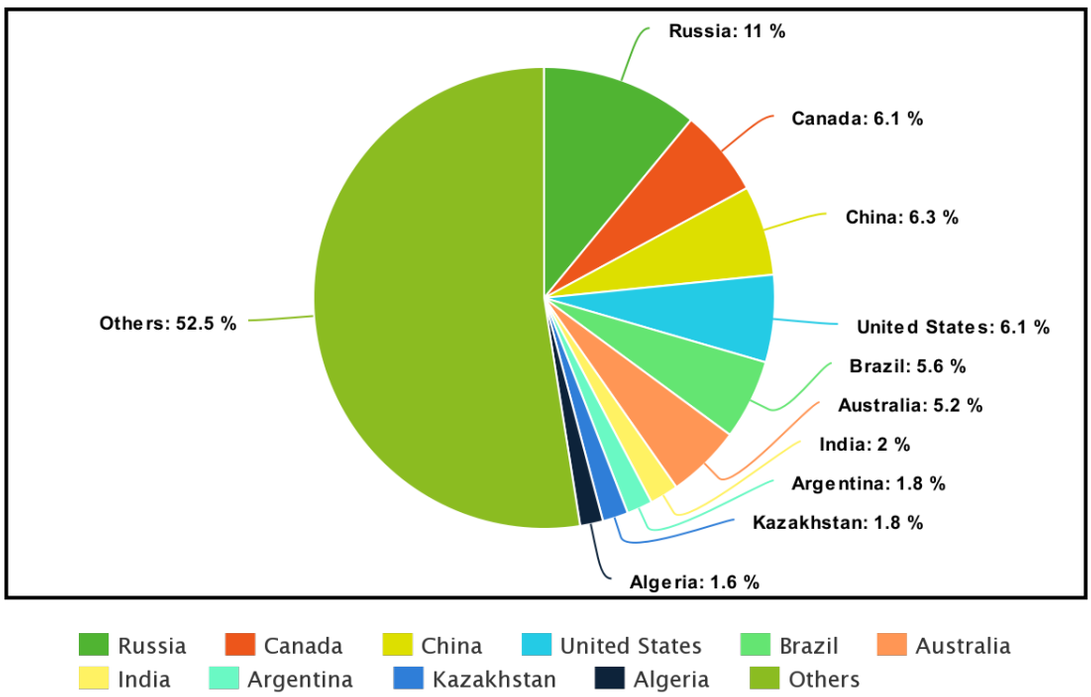

- जनसंख्या शब्द एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में व्यक्तियों की कुल संख्या को संदर्भित करता है, जो कि जैविक संतानों की एक इकाई के रूप में उपजाऊ संतान और कार्य करने के लिए प्राकृतिक परिस्थितियों में परस्पर क्रिया कर सकते हैं।

भारत में जनसंख्या वृद्धि

- जनसंख्या वृद्धि को किसी विशिष्ट समय के दौरान किसी देश / क्षेत्र के निवासियों की संख्या में परिवर्तन के रूप में समझा जा सकता है।
- इस तरह के परिवर्तन को पूर्ण संख्या के संदर्भ में और प्रति वर्ष प्रतिशत परिवर्तन के संदर्भ में व्यक्त किया जा सकता है।
- 3 प्रक्रियाएं जनसंख्या की वृद्धि को बदल सकती हैं: जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवास।

जन्मदर :	एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों पर जीवित जन्मों की संख्या।
मृत्यु दर :	एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों में मृत्यु दर
प्रवासन :	क्षेत्रों और क्षेत्रों के लोगों की आवाजाही

- वार्षिक वृद्धि दर जिसकी गणना प्रति वर्ष प्रतिशत में की जाती है, जनसंख्या वृद्धि को निर्धारित करती है।
- भारत की विकास दर पिछले कुछ दशकों से धीमी रही है।

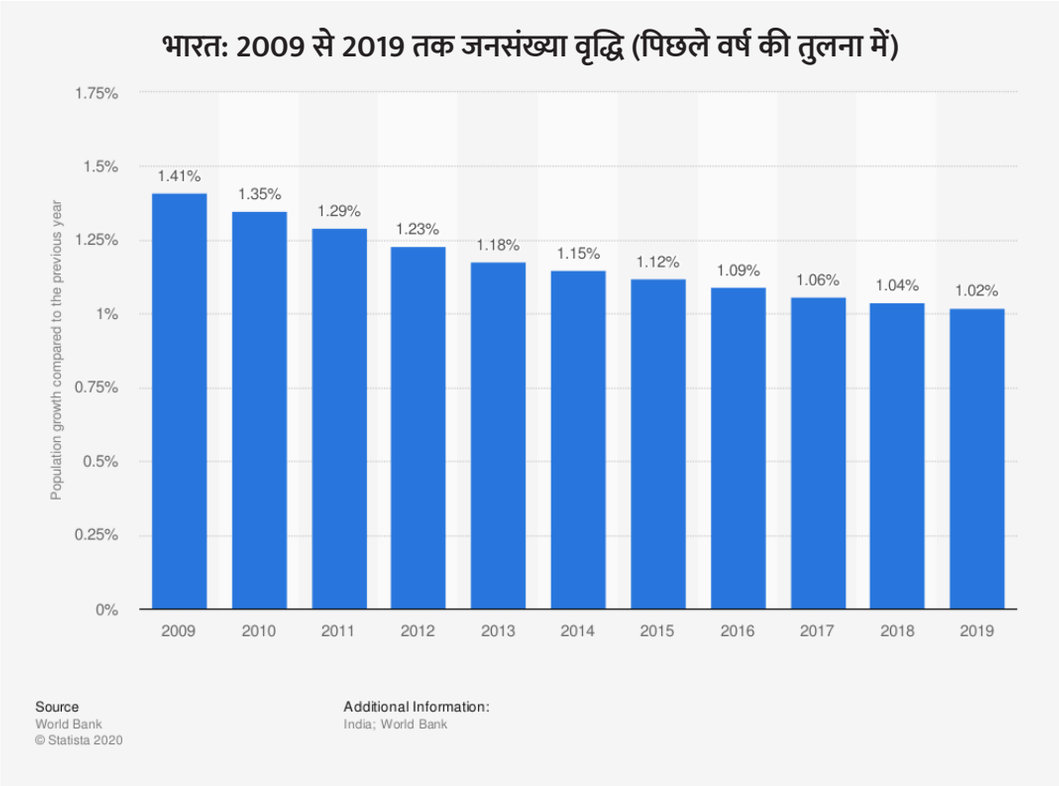

- इस गिरावट को गरीबी उन्मूलन बढ़ाने के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है; बढ़ती शिक्षा का स्तर, विशेषकर महिलाओं के बीच; और बढ़ता नगरीकरण ।

जनसंख्या घनत्व

- जनसंख्या घनत्व को प्रति इकाई क्षेत्र में व्यक्तियों की संख्या के रूप में समझा जा सकता है। भारत का घनत्व दुनिया में सबसे अधिक है।
- भारत में एक राज्य से दूसरे राज्य में भिन्न होता है। भारत में सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व वाला का राज्य बिहार है, जिसमें प्रति वर्ग किमी 1102 व्यक्ति है जबकि सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाला राज्य अरुणाचल प्रदेश है जहां प्रति वर्ग किमी केवल 13 व्यक्ति हैं।
- उत्तरी मैदानों और दक्षिण के राज्यों में बहुत अधिक जनसंख्या घनत्व है।
- जनसंख्या के वितरण का वर्णन करने के लिए 'घनत्व' का उपयोग किया जाता है। अपने क्षेत्र से विभाजित क्षेत्र की कुल जनसंख्या घनत्व देती है।
- घनत्व को प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या के रूप में समझा जा सकता है। कुछ क्षेत्रों में उच्च घनत्व

होता है जबकि कुछ में जनसंख्या का घनत्व कम होता है।

- उच्च घनत्व: - प्रति वर्ग किमी 500 से अधिक लोग।
- कम घनत्व: - प्रति वर्ग किमी 250 से कम लोग।
- 2020 में, भारत का अनुमानित जनसंख्या घनत्व 464 लोग प्रति वर्ग किमी है।
- जब केंद्र शासित प्रदेशों की बात आती है, तो दिल्ली के एनसीटी मे सबसे घनी जनसंख्या (11297 प्रति वर्ग किमी) है, और सबसे कम जनसंख्या अंडमान और निकोबार (46 / वर्ग किमी) है।

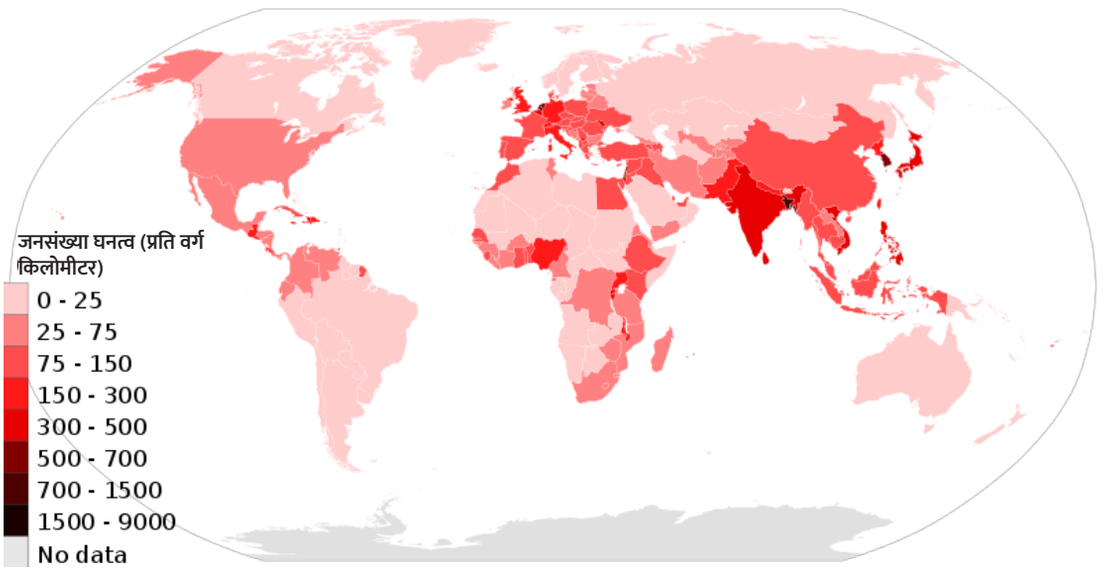

भारत में जनसंख्या वितरण

- जनसंख्या का स्वरूप जहां वे रहते हैं उसे जनसंख्या वितरण कहा जाता है। कुछ स्थानों पर कुछ लोगों के साथ बहुत कम जनसंख्या है, जबकि कुछ स्थानों पर कई लोगों के साथ घनी जनसंख्या है।
- जनसंख्या वितरण हमें दिए गए क्षेत्र में व्यक्तियों के वितरण या प्रसार का अवलोकन देता है। यह जनसंख्या के फैलाव का स्थानिक पैटर्न है।
- भारत देश में जनसंख्या वितरण अत्यधिक असमान है।
- भारत में, उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक जनसंख्या है। इसके बाद महाराष्ट्र, बिहार और पश्चिम बंगाल का स्थान है।
- जनसंख्या वितरण विभिन्न कारणों, जैसे कि इलाके, जलवायु और पानी की उपलब्धता आदि से निर्धारित होता है। इसके अलावा, सामाजिक-आर्थिक और ऐतिहासिक कारण भी जनसंख्या वितरण को प्रभावित करते हैं।

राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का जनसंख्या हिस्सा, भारत: 2011

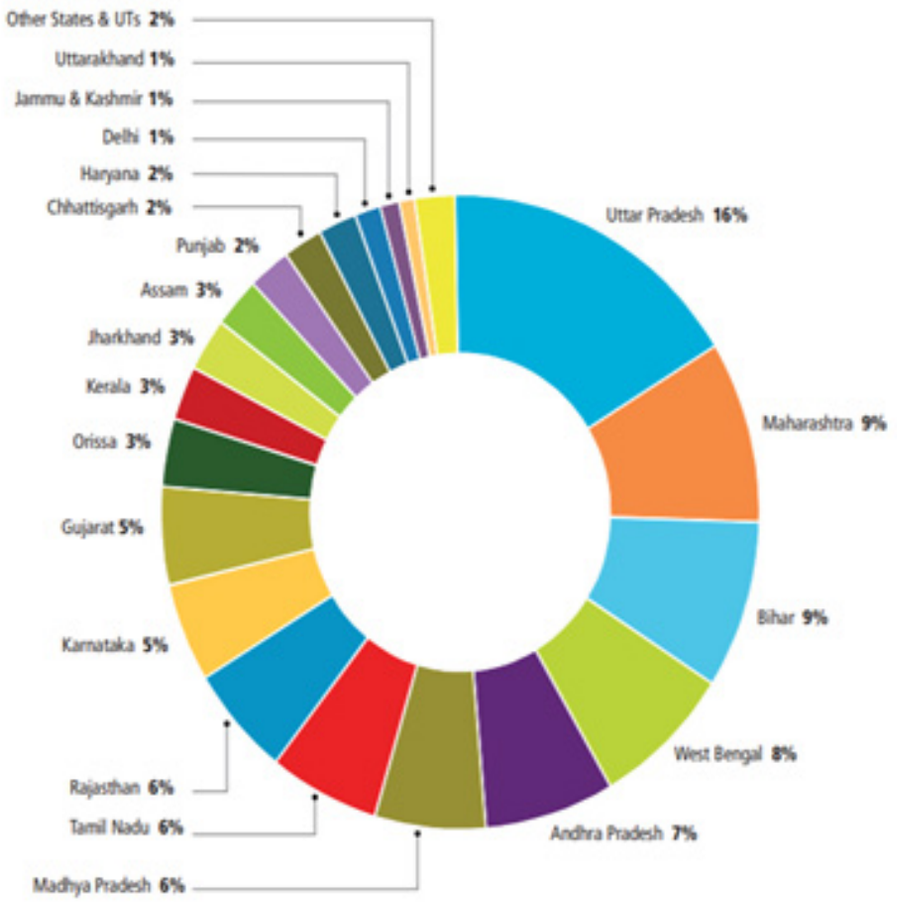

भारत में जनसंख्या के वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले कारण निम्नानुसार हैं:

1. भू-भाग

मैदानी क्षेत्र जनसंख्या के उच्च एकाग्रता और घनत्व को प्रोत्साहित करते हैं जैसे: पर्वतीय क्षेत्रों की तुलना में पहाड़ों की खड़ी ढलान कृषि के लिए भूमि की उपलब्धता, परिवहन, उद्योगों और अन्य आर्थिक गतिविधियों आदि के विकास को प्रतिबंधित करती है।

2. जलवायु

तापमान और वर्षा एक क्षेत्र की जनसंख्या का निर्धारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । जलवायु की चरम सीमा जनसंख्या का केन्द्रीकरण को हतोत्साहित करती है,यह एक मध्यम जनसंख्या के लिए अनुकूल है।

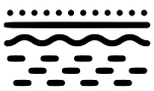

3. मिट्टी

उपजाऊ मिट्टी एक उच्च जनसंख्या एकाग्रता और घनत्व का समर्थन करती है जबकि बांझ मिट्टी दोनों को घटाती है। महान केंद्रीय मैदानों की जलोढ़ मिट्टी और तटीय मिट्टी भारत के दक्कन के पठार की काली मिट्टी एक उच्च जनसंख्या घनत्व निर्माण करती है।

4. जल निकायों

जल सिंचाई, उद्योगों, परिवहन और घरेलू उद्देश्यों के लिए बुनियादी आवश्यकता है। तो, इसकी उपलब्धता जनसंख्या का केन्द्रीकरण को प्रोत्साहित करती है।

5. खनिज संसाधन

खनिज संसाधनों से समृद्ध क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है क्योंकि ऐसे क्षेत्रों में आर्थिक विकास और रोजगार के अवसरों की बड़ी संभावनाएँ होती है।

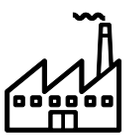

6. उद्योग

कृषि भूमि की तुलना में उद्योग अधिक लोगों को मदद करने में सक्षम हैं। उद्योगों की व्यापक वृद्धि अपेक्षाकृत उच्च जनसंख्या घनत्व के प्रमुख कारणों में से एक है। उदाहरण: पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और गुजरात।

7. परिवहन

अच्छे परिवहन नेटवर्क वाले क्षेत्र अधिक सुलभ हैं और इसलिए अधिक जनसंख्या और उच्च घनत्व क्षेत्र वाले है।भारत के उत्तरी मैदानों में घने परिवहन नेटवर्क है ,वे घनी जनसंख्या वाले क्षेत्र हैं।

8. नगरीकरण

शहरी केंद्र प्रवासी जनसंख्या के लिए चुंबक की तरह काम करते हैं क्योंकि वे रोजगार के अवसर, बेहतर शैक्षणिक और स्वास्थ्य सुविधा, सुरक्षा और जीवन के बेहतर मानक का वादा करते हैं।

भारत की जनसंख्या के लक्षण

1. बड़े आकार और तेजी से विकास

   बड़े आकार और तेजी से विकास भारतीय जनसंख्या की महत्वपूर्ण विशेषता है। आकार के संदर्भ में, यह चीन के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या है।

2. जनसांख्यिकी संक्रमण का दूसरा चरण

   2000-01 में, जन्म दर 25.8 थी और मृत्यु दर कम 85 पर थी। इसके कारण जनसंख्या का तेजी से विकास हुआ। भारत अब जनसांख्यिकीय संक्रमण के दूसरे चरण से गुजर रहा है।

3. लिंग अनुपात संरचना महिला के प्रतिकूल
प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या को लिंगानुपात के रूप में लिया जाता है। • ग्रामीण भारत में 1000 पुरुषों पर 949 महिलाएं हैं, जबकि शहरी भारत में 1000 पुरुषों पर 929 महिलाएं हैं। ग्रामीण भारत में पुरुषों की संख्या 21,813,264 अधिक है और शहरी भारत में महिलाओं की तुलना में 13,872,275 अधिक पुरुष हैं।

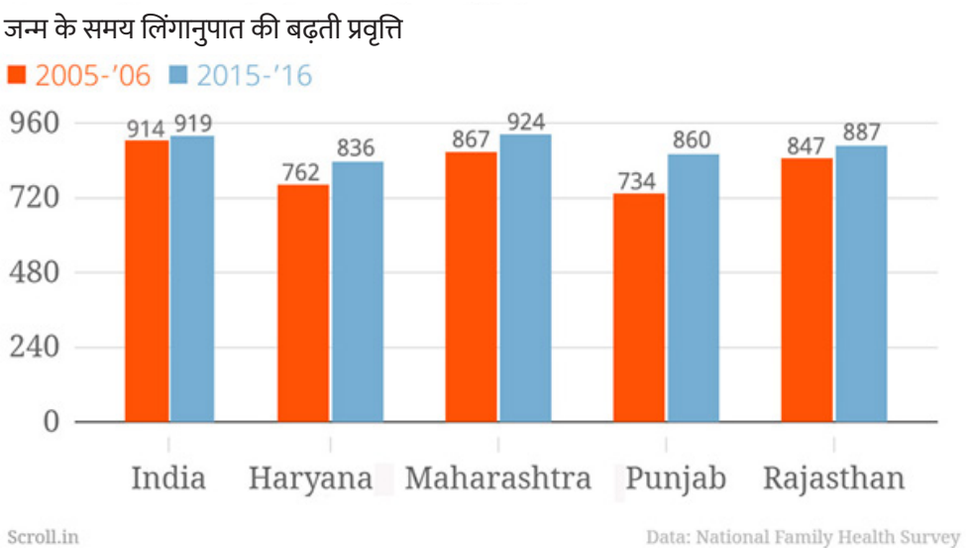

4. जन्म के समय लिंगानुपात की बढ़ती प्रवृत्ति
0-14 आयु वर्ग के व्यक्तियों का अनुपात तुलनात्मक रूप से अधिक है जिसका अर्थ है कि आयु प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की मात्रा को लिंग अनुपात के रूप में जाना जाता है। ग्रामीण भारत में 1000 पुरुषों पर 949 महिलाएं हैं, जबकि शहरी भारत में 1000 पुरुषों पर 929 महिलाएं हैं। ग्रामीण भारत में 21, 813,264 अधिक पुरुष और शेष भारत में महिलाओं की तुलना में 13,872,275 अधिक पुरुष हैं।

5. नीचे भारी आयु संरचना
आयु वर्ग के 0-14 में व्यक्तियों का अनुपात तुलनात्मक रूप से अधिक है जिसका अर्थ है कि भारतीय जनसंख्या की आयु संरचना है नीचे भारी। 2011 की जनगणना संख्या का अनुमान है कि 18-35 वर्ष की आयु की महत्वपूर्ण जनसांख्यिकी श्रेणी में जनसंख्या 31.3% है। 35 वर्ष से कम आयु के देश की जनसंख्या 51.8% है। इसमें से 48.2% महिलाएँ हैं और 51.8% पुरुष हैं, 30.1% शहरी क्षेत्रों में रहते हैं और 69.9% ग्रामीण भारत में स्थित हैं।

6. कम कार्य सहभागिता दर
भारत की जनसंख्या की एक उल्लेखनीय विशेषता है कि कुल जनसंख्या के भीतर श्रम बल का कम अनुपात है। श्रम बल जनसंख्या का वह हिस्सा है जो 15-59 आयु वर्ग के अंतर्गत आता है। बढ़ती उम्र के कारण किसी भी अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। यदि श्रम भागीदारी दर उच्च स्तर पर है, तो यह अर्थव्यवस्था के लिए एक अच्छा संकेत है। लेकिन यह किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए चेतावनी संकेत के रूप में कार्य कर सकता है, अगर यह निचले हिस्से में हो।

7. निम्न-गुणवत्ता जनसंख्या
   जनसंख्या की गुणवत्ता के निर्धारक साक्षरता और व्यक्तियों के प्रशिक्षण के स्तर की सीमा है। इन मापदंडों क ध्यान में रखते हुए, भारत में जनसंख्या की गुणवत्ता कम है।

भारत में जनसंख्या परिवर्तन के 4 निर्धारक

1. **जन्म दर, मृत्यु दर से उच्च है:**
   भारत मृत्यु दर को कम करने में सफल रहा है। दूसरी ओर, यह उच्च जन्म दर को नियंत्रित करने के लिए तैयार नहीं है। जन्म दर को बढ़ने में जनसंख्या नीतियों और अन्य उपायों का योगदान रहा है, फिर भी यह अन्य देशों की तुलना में बहुत अधिक है।

2. **प्रारंभिक विवाह और सार्वभौमिक विवाह प्रणाली:**
   हालांकि कानूनी तौर पर एक महिला की विवाह योग्य आयु अठारह वर्ष है, लेकिन फिर भी कम उम्र में विवाह की अवधारणा अभी भी कायम है और कम उम्र में शादी करने से अधिक बच्चों के जन्म की संभावना बढ़ती है। साथ ही, भारत में, विवाह और बाल संस्कार पवित्र दायित्व और एक सार्वभौमिक प्रथा है, और लगभग हर महिला का प्रजनन आयु में विवाह होता है।

3. **गरीबी और निरक्षरता:**
   अल्पविकसित परिवारों में एक मान्यता है कि परिवार के भीतर सदस्यों की मात्रा जितनी अधिक होगी, आय अर्जित करने वाले हाथ उतने ही अधिक होगे। कुछ लोग महसूस करते हैं कि उनके बुढ़ापे में उनकी देखभाल करने के लिए अधिक बच्चों की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, कुपोषण से होने वाली बच्चों की मृत्यु के कारण वह समझते है की अधिक बच्चों की आवश्यकता है।

4. **पुराने सांस्कृतिक प्रमाण:**
   पुरूष को रोटी कमाने वाला, वंश का वाहक, और माता-पिता के लिए मुक्ति का स्रोत माना जाता है। कई परिवार पुत्र की आशा में कई बच्चों को जन्म देते हैं।

5. **अवैध प्रवसन:**
   अंत में, यह तथ्य बहुत कम है कि पड़ोसी देशों से अवैध प्रवसन लगातार हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप जनसंख्या घनत्व में वृद्धि हुई है।

महत्वपूर्ण तथ्य

1. भारत 2020 की जनसंख्या संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुरूप मध्य वर्ष में 138 करोड़ लोगों की अनुमानित है।
2. पूरी दुनिया की आबादी में भारत की आबादी 17.7% है।
3. भारत जनसंख्या के आधार पर देशों की सूची (और निर्भरता) के भीतर दूसरे स्थान पर है।
4. भारत में जनसंख्या घनत्व 464 प्रति किलोमीटर (1,202 लोग प्रति मील) है।
5. पूरे एकड़ 2,973,190 किमी (1,147,955 वर्ग मील)
6. 35.0 शहरी आबादी (2020 में 48.31 करोड़ लोग)
7. भारत की औसत उम्र 28.4 साल है।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति (एनपीपी) 2000

- राष्ट्रीय जनसंख्या नीति (एनपीपी) 2000 के तत्काल उद्देश्य में गर्भनिरोधक, स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे और स्वास्थ्य कर्मियों और बाल स्वास्थ्य के लिए आवश्यक जरूरतों को संबोधित करना शामिल है
- इस नीति का मध्यम-उद्देश्य पूर्ण जन्मदर को (टीएफआर) प्रतिस्थापन स्तर तकलाना है लाना है । इस नीति का दीर्घकालिक उद्देश्य 2045 तक एक स्थिर जनसंख्या को प्राप्त करना है।

भारत में साक्षरता

साक्षरता क्या है?

- साक्षरता यह है कि जानकारी को पढ़ने, लिखने और समझने की क्षमता ताकि प्रभावी ढंग से बात की जा सके। यह सशक्त सामाजिक और मानवीय विकास को बढ़ावा देता है।
- व्यक्तियों की समस्या को सुलझाने की क्षमता के साथ संयुक्त सामाजिक सम्मेलनों का ज्ञान उन्हें साक्षर होने के रूप में निर्धारित करता है।
- भारत में, जबकि वयस्क साक्षरता दर को 15 वर्ष से अधिक आयु के लोगों के लिए मापा जाता है, युवा साक्षरता की दर को 15-24 वर्ष की आयु के लोगों के लिए मापा जाता है।
- यूनेस्को के अनुसार, साक्षरता की गणना किसी आयु सीमा के साक्षर लोगों की संख्या को इसी आयु वर्ग की जनसंख्या से विभाजित करके और परिणाम को 100 से गुणा करके प्राप्त किया जाता है।
- वैकल्पिक रूप से, निरक्षरता दर प्राप्त करने के लिए निरक्षरों की मात्रा का उपयोग करके समतुल्य विधि लागू करके भी इसकी गणना की जा सकती है या साक्षरता दर को 100% से घटाकर
- 2011 की जनगणना के उद्देश्य से, सात वर्ष या उससे अधिक आयु का व्यक्ति, जो किसी भी भाषा को समझने के साथ पढ़

और लिख सकता है, उन्हे साक्षर माना जाता है। एक व्यक्ति, जो केवल पढ़ सकता है, लेकिन लिख नहीं सकता, वह साक्षर नहीं है।

साक्षरता पर हाल के एनएसओ डेटा

- एनएसओ के डेटानुसार, भारत की औसत साक्षरता दर 77.7% है।
- आंध्र प्रदेश की साक्षरता दर 66.4% है जो भारत के सभी राज्यों में सबसे खराब है। यह बिहार के 70.9% से काफी कम है। केरला 96.2% के साथ सूची में सर्वोच्च स्थान पर है। दिल्ली 88.7% के साथ दूसरे स्थान पर रहा।

जनगणना 2011 के अनुसार भारत में साक्षरता दर

- 2011 जनगणना के परिणाम बताते हैं कि देश में साक्षरता में वृद्धि हुई है।
- देश में साहित्य की दर 74.04 है प्रतिशत है।

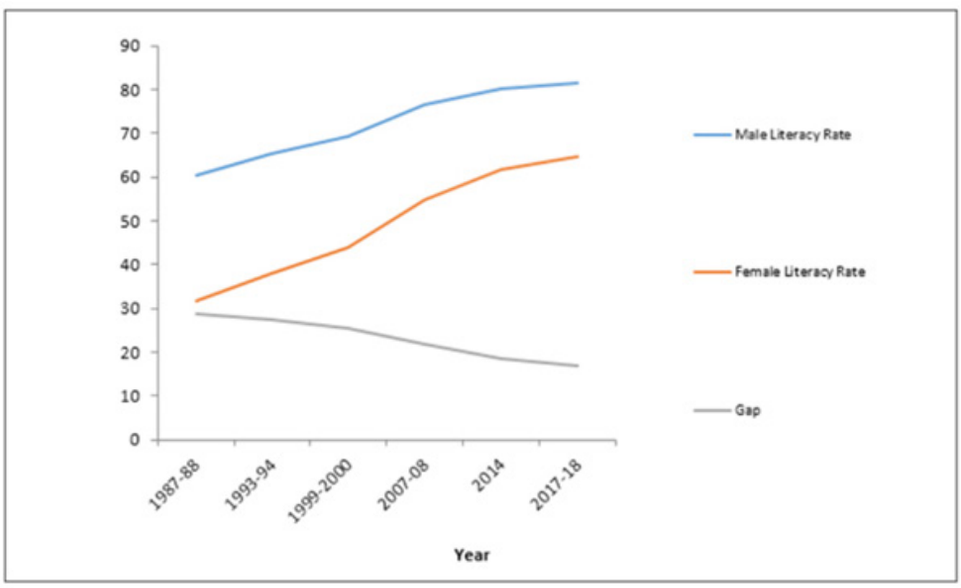

	1987-88	1993-94	1999-00	2007-08	2014	2017-18
Male Literacy Rate	60.5	65.5	69.2	76.6	80.3	81.5
Female Literacy Rate	31.7	37.9	43.8	54.9	61.8	64.6
Gap	28.8	27.6	25.4	21.7	18.5	16.9

Source: *National Sample Survey @ Observer Research Foundation's India Data Labs*

पुरुष साक्षरता दर, महिला साक्षरता दर, अंतर

- पुरुषों की साक्षरता दर 82.14 है, और महिला साक्षरता दर 65.46 है।
- केरल 93.91 प्रतिशत साक्षरता दर के साथ शीर्ष पर है। इसके बाद लक्षद्वीप (92.28 प्रतिशत) और उसके बाद मिजोरम (91.58 प्रतिशत) का नंबर आता है।
- बिहार की साक्षरता दर 63.82 प्रतिशत है। यह देश में अरुणाचल प्रदेश (66.95 प्रतिशत) और राजस्थान (67.06 प्रतिशत) से कम है।

साक्षरता में लैंगिक असमानता

- साक्षरता में लैंगिक असमानता इस समय में एक प्रमुख चिंता का विषय हो सकता है, विशेषकर भारत में।
- साक्षरता में लैंगिक असमानता तब होता है जब पुरुषों और महिलाओं के बीच शालेय स्तर पर व्यवस्थित अंतर होते हैं।
- भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार, साक्षरता की सामान्य दर 73 प्रतिशत है। पुरुषों के लिए साक्षरता की दर 80.9 प्रतिशत है, महिलाओं के लिए यह 64.6 प्रतिशत है।

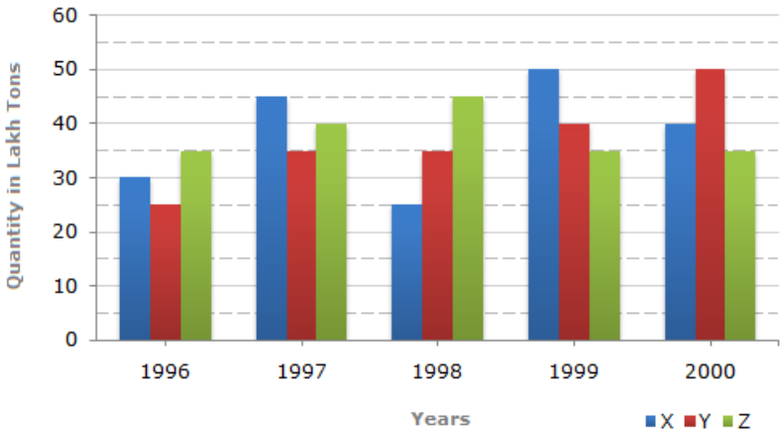

लाख टन में मात्रा

- एनएसओ के आंकड़ों के अनुसार, अखिल भारतीय स्तर पर अंतर 14.4% प्रतिशत अंकों के साथ पुरुष साक्षरता 84.7% और महिला साक्षरता 70.3% है। शहरी और ग्रामीण साक्षरता दर के बीच अंतर, पुरुषों और महिलाओं के बीच परिमाण के बराबर क्रम का है।
- केरल में पुरुष और स्त्री साक्षरता के यह बीच यह सबसे छोटा अंतर है, सिर्फ 2.2 प्रतिशत अंक है।

भारत में साक्षरता मानकों में सुधार के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम

- सरकार विभिन्न छात्रवृत्ति परीक्षाओं का आयोजन करती है और शालेय गणवेश (स्कूल वर्दी), पाठ्यपुस्तकें और स्टेशनरी प्रदान करती है ताकि छात्रों और वयस्कों को प्रोत्साहित कर सके।
- 1995 में सरकार द्वारा मिड डे मील योजना शुरू की गई। सरकारी स्कूलों में नामांकन, उपस्थिति और अवधारण में सुधार करने के लिए छात्रों को मुफ्त अनाज की आपूर्ति की जाती है।
- स्कूल शिक्षा में सुधार के व्यापक लक्ष्य के साथ सरकार द्वारा समागम शिक्षा कार्यक्रम शुरू किया गया था। इसे स्कूली शिक्षा और समान शिक्षण परिणामों के समान अवसरों के संदर्भ में मापा जा सकता है।
- शिक्षा के महत्व के बारे में लोगों में जागरूकता लाने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता अभियान चलाए गए। उन्हें अपने बच्चों को कॉलेजों में भाग लेने या भेजने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

भारत में लिंग अनुपात

लिंग अनुपात क्या है?

- लिंग अनुपात यह है कि किसी दिए गए जनसंख्या मे महिलाओं के लिए पुरुषों का अनुपात, आमतौर पर व्यक्त किया जाता

है क्योंकि प्रत्येक 100 महिलाओं के लिए पुरुषों की संख्या। साधारण शब्दों में इसे परिभाषित किया गया है जैसे प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या क्या है।

- आपके समय के किसी बिंदु पर समाज के दौरान पुरुषों और महिलाओं के बीच प्रचलित समानता की सीमा को जीने के लिए लिंग अनुपात एक महत्वपूर्ण सामाजिक संकेतक है।
- लिंग अनुपात मृत्यु के विभिन्न पैटर्न और जनसंख्या के भीतर पुरुषों और महिलाओं के लिए प्रवास के लिए भिन्न हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, पुरुष युद्धों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं और चलनशिल होने की संभावना होती है और अन्य क्षेत्रों या देशों में पलायन करते हैं, जो जनसंख्या के भीतर लिंग अनुपात को प्रभावित कर सकता हैं, विशेष रूप से युवा वयस्क पुरुषों के लिए।

भारत में लिंगानुपात

- 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत का लिंग अनुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 943 महिलाओं का है।

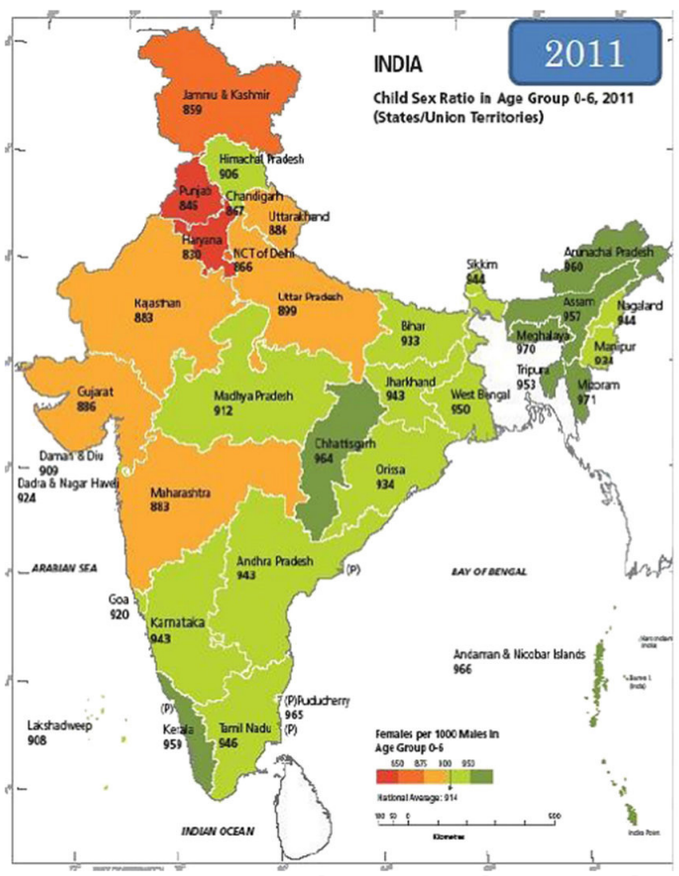

बाल लिंगानुपात 0-6 आयु वर्ग, 2011 (राज्य/केंद्र शासित प्रदेश)

- संयुक्त राष्ट्र के आंकडो के अनुसार, लिंग अनुपात प्रति 100 महिलाओं पर पुरुषों की संख्या है। भारत का लिंग अनुपात 108.176 है, जिसका अर्थ है कि भारत में प्रति 1000 पुरुषों पर 924 महिलाएं हैं। 51.96% पुरुष जनसंख्या की तुलना में भारत में 48.04 पुरुष जनसंख्या है। भारतीय जनसंख्या में महिलाओं की तुलना में 54,197,555 अधिक पुरुष हैं। महिला से पुरुष अनुपात के मामले में भारत 201 देशों में से 189 वें स्थान पर है।
- भारत के लिंगानुपात 10 अंकों का सुधार, वर्ष 2001 में 933 से 2011 में 943 हूआ है। ग्रामीण और शहरी भारत में, लिंग

अनुपात में क्रमशः 3 और 29 दर से सुधार हुआ है। 1901 में, भारत में 972 का लिंगानुपात सबसे अच्छा था।

- जैसा कि देखा गया है, 25-29 आयु से ऊपर की महिलाओं की जनसंख्या का अनुपात में सुधार होता रहता है और 100 साल से ऊपर के पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या लगभग दोगुनी है।

भारत में प्रजनन दर

- कुल जन्म दर (टीएफआर) से तात्पर्य है,राज्य के भीतर जन्म लेने वाले शिशुओ की कुल संख्या, एक महिला के प्रजनन क्षमता की मौजुदा दर वाली आयु- विशिष्ट जनसंख्या से है।
- • टीएफआर को परिभाषित किया गया है क्योंकि शिशुओ की संख्या जो प्रति महिला पर पैदा होती हैं, अगर वह आयु-विशिष्ट प्रजनन दर की वर्तमान अनुसूची के अनुसार बच्चों को जन्म देने वाले वर्षों से गुजरती हैं। यह जनसंख्या के रुझान का एक प्रमुख संकेत है।
- • देश में 2017 के लिए कुल जन्म दर (TFR) घटकर 2.2 हो गई है।

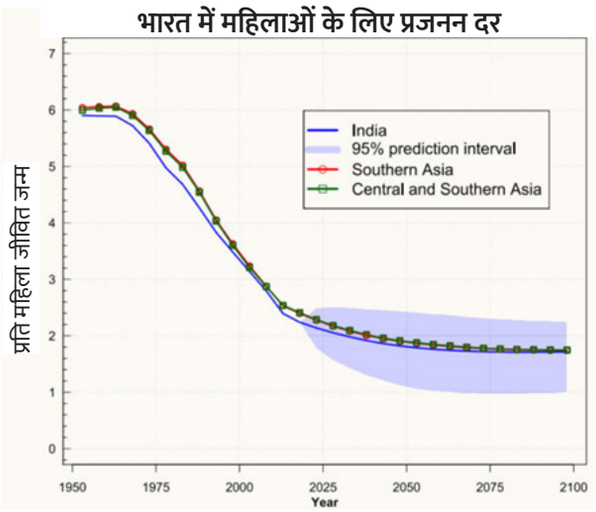

शिशु मृत्यु दर

- शिशु मृत्यु दर दर (IMR) एक ग्रामीण ओर अड़ोस - पड़ोस के इलाको मे सामान्य स्वास्थ्य परिदृश्य का एक अपरिष्कृत संकेत हो सकता है।
- यह दर देश के स्वास्थ्य और जीवन स्तर के लिए एक महत्वपूर्ण महत्वपूर्ण संकेतक है; एक शिशु मृत्यु दर स्वास्थ्य देखभाल के उच्च स्तर को इंगित करता है।
- यह परिभाषित किया गया है क्योंकि वें शिशु मृत्यु (बच्चे लेकिन एक वर्ष तक) प्रति हजार जीवित जन्म एक निश्चित अवधि के दौरान और किसी दिए गए क्षेत्र के लिए।.
- शिशु मृत्यु दर यह है कि प्रति 1,000 जीवित जन्मों में एक वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु की संख्या।
- शिशु मृत्यु दर के कारणों में समय से पहले जन्म, सेप्सिस या मेनिन्जाइटिस, अचानक शिशु मृत्यु सिंड्रोम, और निमोनिया शामिल हैं।
- 2019 में, भारत में शिशु मृत्यु दर प्रति 1,000 जीवित जन्मों में लगभग 28.3 मौतें थीं, जो पिछले वर्षों की तुलना में एक बड़ी कमी थी।

वार्षिक% परिवर्तन, प्रति 1000 जीवित जन्मों पर मृत्यु

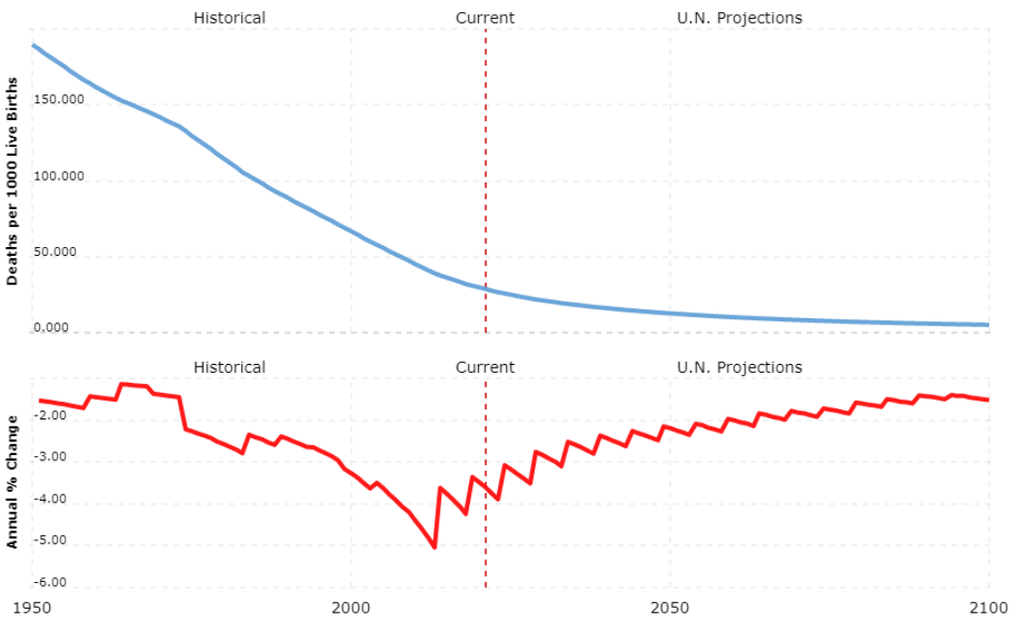

शिशु मृत्यु दर, भारत 2008-2017

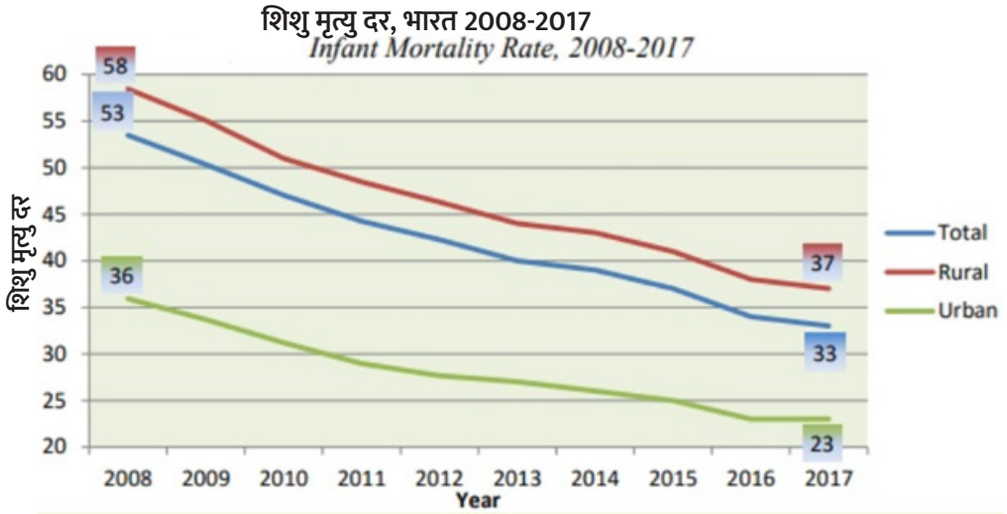

भारत में जनसांख्यिकीय लाभांश

भारत में जनसांख्यिकीय लाभांश क्या है

- "जनसांख्यिकीय लाभांश" को परिभाषित किया गया है क्योंकि 25 से 64 वर्ष के बीच की तेजी से बढ़ती कामकाजी जनसंख्या जो त्वरित आर्थिक प्रक्रिया के लिए एक अवसर दे सकती है।
- देश तेजी से घटती जन्म और मृत्यु दर के कारण भारत की कामकाजी उम्र की जनसंख्या अब बढ़ रही है।
- भारत दुनिया के सबसे युवा देशों में से है और यहां तक कि अगले 15 वर्षों में भी, भारत की आधी जनसंख्या 30 वर्ष से कम आयु की है।
- आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, भारत की श्रम शक्ति, जो 2006 में 475 मिलियन थी, 2011 में लगभग 526 मिलियन होने का अनुमान लगाया गया और जो 2031 में 653 मिलियन तक पहुंच सकता है।

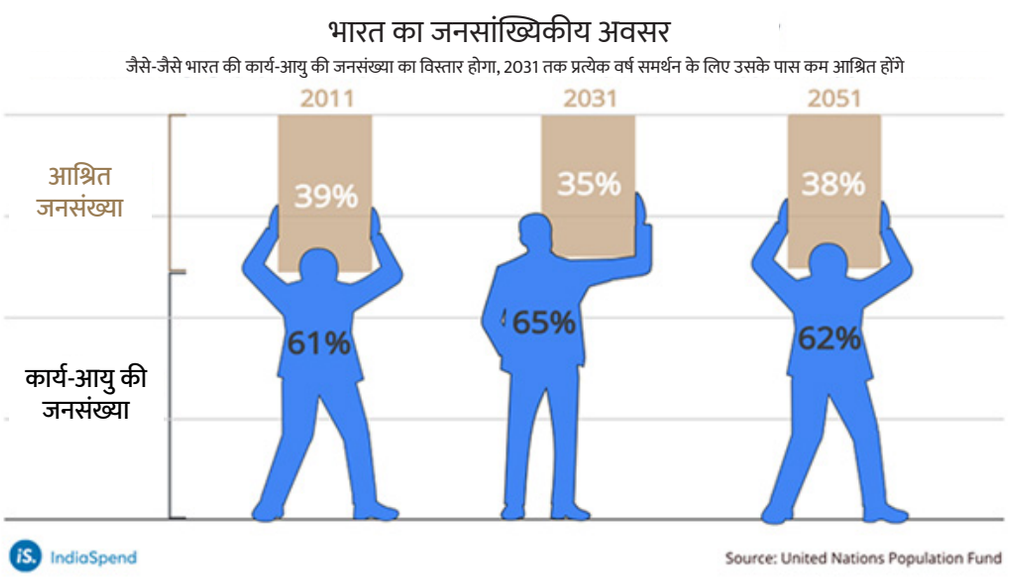

अनुमान

1. संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (UNFPA) ने हाल ही में एक रिपोर्ट के दौरान स्वीकार किया कि भारत को अपनी बढ़ती कामकाजी जनसंख्या के कारण जनसांख्यिकीय लाभांश प्राप्त हो सकता है।
2. यह उल्लेखनीय है कि भारत की 30 प्रतिशत जनसंख्या 14 वर्ष से कम आयु की है, जिसमें कामकाजी आयु (15-59 वर्ष) 62 प्रतिशत है। भारत में केवल 8 प्रतिशत लोग 60 वर्ष या इससे अधिक आयु के हैं।
3. यूएनएफपीए का अनुमान है कि 2030 तक भारत की कामकाजी उम्र की जनसंख्या अधिकतम 65 प्रतिशत तक पहुंच जाएगी।

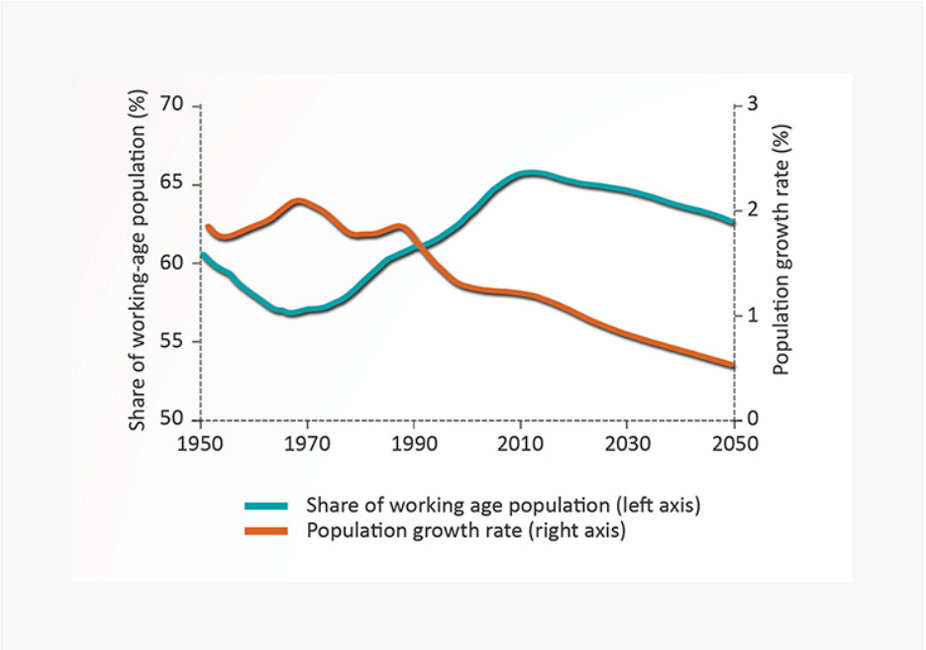

4. साथ ही, देश के जनसांख्यिकीय लाभांश दुनिया के अन्य देश की तुलना में 2005 से 2055 तक, पांच दशकों तक उपलब्ध होने वाली हैं।
5. 2020 तक, भारत को दुनिया के सबसे अधिक जनसंख्या वाले देश के रूप में चीन से आगे निकलने की भविष्यवाणी की गई है। चीन की 37 वर्ष की तुलना में भारत में औसत जनसंख्या की औसत आयु अब 28 है।
6. 2050 तक, भारत की वर्तमान जनसंख्या लगभग 1.73 बिलियन तक बढ़ जाने का अनुमान है, जिसमें कुछ 400 मिलियन अतिरिक्त लोग शामिल हैं।

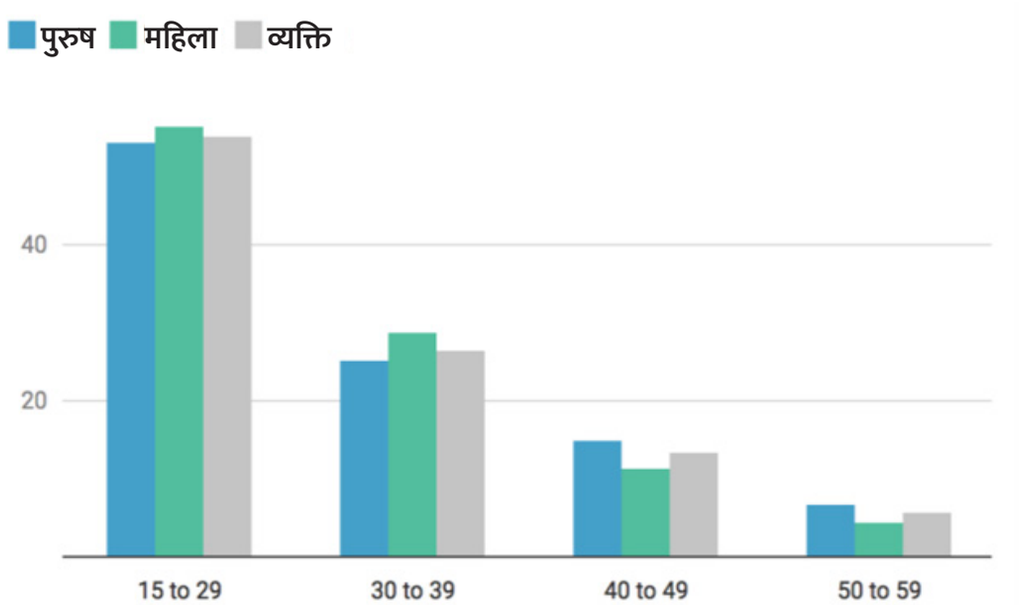

जनसांख्यिकी लाभांश के लाभ और चिंता

लाभ	चिंता
1. श्रम की आपूर्ति: पहला लाभ बढ़ी हुई श्रम आपूर्ति का है,हालांकि, इस लाभ का व्यापक अर्थव्यवस्था की शक्ति को बढ़ाने के लिए उपयोग तभी हो सकता है जब अतिरिक्त कार्य बल को उत्पादक कार्यों मे रोजगार मिल पाए,अथवा यह शुद्ध जनसांख्यिकीय उपहार बनके रह जाएगा।	**1. रोजगार और रोजगार क्षमता को चुनौती** • भारत सरकार द्वारा आयोजित एक रोजगार सर्वेक्षण, आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण के आंकड़ों के अनुसार, 15+ वर्ष के लोगों की भारत की श्रम भागीदारी, 2017-2018 में 49.8% थी, जो 2015-16 में 50.4% थी। • इस कमी का कारण महिलाओं की जनसंख्या-कार्यकर्ता अनुपात वर्ष 2009-10 में 22.8%, आया 2017-18 में 16.5%। भारत का जनसांख्यिकीय लाभांश 45 साल की ऊंचाई पर बेरोजगारी के रूप में जोखिम में है।
2. बचत में वृद्धि: दूसरा तंत्र है बचत में वृद्धि क्योंकि आश्रितों की संख्या कम हो जाती है, व्यक्ति अधिक बचत कर सकते हैं। विकासशील देशों के राष्ट्रीय बचत दरों में यह वृद्धि पहले से ही पूँजी की कमी का सामना कर रह पूंजी के भंडार को बढ़ाती है और उच्च उत्पादकता का परिणाम है क्योंकि संचित पूंजी का निवेश किया जाता है।	**2. बेरोजगार विकास:** • एनएसएसओ आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2017-18 के अनुसार, 15-59 वर्ष आयु वर्ग के लिए भारत की श्रम शक्ति भागीदारी दर लगभग 49% है कार्यशील-आयु की आधी जनसंख्या बेरोजगार है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में अलगाववाद की मौजूदा प्रवृत्ति के कारण, भारतीय अर्थव्यवस्था के बेरोजगार विकास के बारे में चिंता बढ़ रही है।
3. मानव पूंजी: तीसरा तंत्र मानव पूंजी है। प्रजनन दर में कमी स्वस्थ महिलाए और कम आर्थिक दबाव की ओर ले जाती है। यह माता-पिता को प्रति बच्चे के लिए अधिक संसाधन लेने की अनुमति देता है, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य और शैक्षणिक परिणाम बेहतर होते हैं।	**3. मानव विकास मापदंडों में खराब प्रदर्शन:** • भारत संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) द्वारा प्रकाशित मानव विकास सूचकांक में 189 देशों में से 130 रैंक पर है। • स्वास्थ्य और शिक्षा में सुधार भारत के लिए अपने जनसांख्यिकीय लाभांश का उपयोग करने के लिए महत्वपूर्ण है।
4. आर्थिक विकास: बढ़ती उम्र की जनसंख्या को रोजगार के अवसर प्रदान करके आयु संरचना परिवर्तन से होने वाले आर्थिक लाभ अक्सर प्राप्त होते हैं। इस चरण में बचत में वृद्धि, कार्यबल के भीतर लड़कियों की संख्या बढ़ने, शिक्षा पर अधिक खर्च और स्वास्थ्य देखभाल और बेहतर उत्पादकता जैसे आर्थिक लाभ सहित कई लाभ भी घरों में आते हैं।	**4. अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का प्रभुत्व:** • भारत में श्रम शक्ति को अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में नियोजित किया जाता है, जो भारत की आर्थिक वृद्धि में बाधक है। • अनौपचारिक अर्थव्यवस्था से संबंधित अन्य मुद्दों में श्रम शोषण, काला धन, मनी लॉन्ड्रिंग और अन्य अवैध गतिविधियां शामिल हैं।
5. महिला कार्यबल में वृद्धि प्लेनेट बैंक के अनुसार, भूटान के 67% और बांग्लादेश के 58% की तुलना में भारत की महिला श्रम शक्ति की भागीदारी 27% है।जनसांख्यिकीय लाभाश को फिर से प्राप्त करने के ग्रामीण महिलाओं की समृद्धि के लिए,उनकी प्रतिभा की संपत्ति उपयोग करना होगा , जो भारत के आधे कर्मचारियों की संख्या है, महत्वपूर्ण	**5. कौशल की कमी:**

लाभ	चिंता
है।	• भारत जनसांख्यिकी लाभांश के अवसर का लाभ उठाने में असमर्थ रहा कारण कम मानव पूंजी आधार और कम कुशल श्रम शक्ति ऊपलब्ध है। • देश मे खराब शिक्षा प्रणाली होने के कारण स्किल इंडिया जैसी सरकारी योजनाए भी अधिक सुधार नहीं कर पाई।